

निःशुल्क नमूना सेट | इग्नू गेस पेपर | दिसंबर 2026 सत्रांत परीक्षा

एम.एच.डी.-002 आधुनिक हिन्दी काव्य

जून 2026 का प्रश्नपत्र क्या पूछता है, सप्रसंग व्याख्या की विधि, तीन उत्तर पूरे हल और बाकी कवियों की तैयारी-योजना

पाठ्यक्रम: एम.एच.डी.-002 आधुनिक हिन्दी काव्य (MHD-02 और MHD-2 नाम से भी खोजा जाता है)

कार्यक्रम: एम. ए. हिन्दी (MAHD)

दिसंबर 2026 परीक्षा: सोमवार, 4 जनवरी 2027, सुबह 10 से 1 बजे (इग्नू की अस्थायी दिनांक-सूची, 21 सितंबर 2026)

आधार: इग्नू का एम.एच.डी.-002 प्रश्नपत्र, जून 2026 (29 सितंबर 2026 को पढ़ा गया) और पाठ्यक्रम की इकाई-योजना

अध्ययन सामग्री

अपने शब्दों में लिखें

इग्नू का प्रकाशन नहीं

प्रश्नपत्र का स्वरूप (जून 2026 के अनुसार)

- समय और अंक:** 3 घण्टे, अधिकतम अंक 100।
- प्रश्न 1 अनिवार्य है:** पाँच अवतरणों में से किन्हीं तीन की सप्रसंग व्याख्या, $3 \times 12 = 36$ अंक।
- शेष प्रश्न:** बाकी नौ प्रश्नों में से कोई चार, हर प्रश्न 16 अंक का, कुल 64 अंक।
- एक प्रश्न, एक कवि:** हर निबंधात्मक प्रश्न एक कवि पर केन्द्रित है।

यह सेट एक प्रश्नपत्र, यानी सबसे ताज़ा जून 2026 के प्रश्नपत्र पर आधारित है। इसलिए यह दोहराव का नक्शा नहीं, **प्रश्नपत्र के ढाँचे का नक्शा** है। परीक्षा से पहले ignou.ac.in पर पिछले सत्रों के एम.एच.डी.-02 प्रश्नपत्र भी देख लें।

जून 2026 में क्या पूछा गया

प्रश्न	कवि और विषय
1	पाँच अवतरण: प्रसाद की 'कामायनी' का श्रद्धा-प्रसंग, निराला की 'राजे ने अपनी रखवाली की', नयी कविता का एक अंश, मुक्तिबोध (व्याख्या) की 'अँधेरे में', पंत की 'भारतमाता'
2	महादेवी वर्मा का छायावादी कवि के रूप में महत्त्व
3	मैथिलीशरण गुप्त के काव्य के प्रतिनिधि स्वर
4	'असाध्य वीणा' के आधार पर अज्ञेय की रचना-दृष्टि और जीवन-मूल्य
5	शमशेर बहादुर सिंह की कविताओं का शिल्प-पक्ष
6	दिनकर की कविताओं में राष्ट्रीय चेतना
7	'अँधेरे में' और भयाक्रांत शोषित वर्ग का चित्रण
8	रघुवीर सहाय की काव्यभाषा
9	नागार्जुन की सपाट भाषा में व्यंग्य और नाटकीयता
10	निराला के काव्य में प्रयोगशीलता

इससे क्या सीखें:

- नौ प्रश्न नौ कवियों पर थे और आपको चार करने हैं, इसलिए कम से कम छह-सात कवियों की पूरी तैयारी रखें।

- निराला और मुक्तिबोध व्याख्या और निबंध, दोनों में आए, इसलिए इन दोनों को सबसे पहले तैयार करें।
- व्याख्या के पाँच अवतरण छायावाद (प्रसाद, पंत, निराला) से लेकर नयी कविता और मुक्तिबोध तक फैले थे।

सप्रसंग व्याख्या: 36 अंकों की विधि

12 अंक की एक व्याख्या में लगभग 300 से 350 शब्द लिखें, चार भागों में:

1. **संदर्भ:** कविता और कवि का नाम। जैसे: "प्रस्तुत पंक्तियाँ ... की कविता ... से ली गई हैं।"
2. **प्रसंग:** कविता में यह अंश कहाँ आता है और उससे पहले क्या हुआ।
3. **व्याख्या:** पंक्तियों का भाव अपने शब्दों में, कठिन शब्दों और संकेतों को खोलते हुए।
4. **विशेष:** भाषा, छंद, अलंकार, बिंब और प्रतीक; और यह अंश पूरी कविता के मूल भाव से कैसे जुड़ता है।

उदाहरण (पाठ्यक्रम के एक कवि से, अभ्यास के लिए): "हम कौन थे, क्या हो गए हैं, और क्या होंगे अभी / आओ विचारें आज मिल कर, ये समस्याएँ सभी।"

संदर्भ: प्रस्तुत पंक्तियाँ मैथिलीशरण गुप्त की प्रसिद्ध कृति 'भारत-भारती' (1912) से ली गई हैं। **प्रसंग:** गुलाम भारत की दुर्दशा देखकर कवि देशवासियों को आत्ममंथन के लिए पुकारता है। **व्याख्या:** कवि पूछता है कि हम अतीत में कितने गौरवशाली थे, आज किस पतन में हैं और आगे हमारा क्या होगा। वह चाहता है कि सब मिलकर इन प्रश्नों पर विचार करें, क्योंकि समाधान मिलकर ही निकलेगा। **विशेष:** खड़ी बोली में ओजपूर्ण उद्बोधन है; प्रश्न-शैली से प्रभाव बढ़ता है; अतीत, वर्तमान और भविष्य की त्रयी राष्ट्रीय जागरण का पूरा कार्यक्रम बन जाती है; यही गुप्त जी का राष्ट्रीय स्वर है।

तीन उत्तर, पूरे हल (16 अंक)

1. मैथिलीशरण गुप्त के काव्य के मूल प्रतिनिधि स्वरों का विश्लेषण कीजिए।

जून 2026, प्रश्न 3। इग्नू के एम.एच.डी.-02 सत्रीय कार्य में भी गुप्त जी की राष्ट्रीय भावना पर प्रश्न आया है।

भूमिका: मैथिलीशरण गुप्त द्विवेदी युग के सबसे लोकप्रिय कवि हैं। खड़ी बोली को काव्यभाषा के रूप में प्रतिष्ठित करने में उनका बड़ा योगदान है, और वे 'राष्ट्रकवि' के रूप में जाने जाते हैं। उनके काव्य के कई स्वर एक साथ चलते हैं।

1. **राष्ट्रीयता और अतीत-गौरव।** 'भारत-भारती' (1912) में कवि ने भारत के अतीत, वर्तमान और भविष्य की तुलना करके देशवासियों में आत्मगौरव और जागरण की भावना भरी। स्वतंत्रता आंदोलन के दौर में यह कृति बहुत लोकप्रिय हुई।
2. **भारतीय संस्कृति और राम-कथा।** गुप्त जी ने राम-कथा और महाभारत के प्रसंगों को नए युग के मूल्यों से जोड़ा। 'साकेत' में राम-कथा को अयोध्या के भीतर से देखा गया है, और 'पंचवटी' तथा 'जयद्रथ वध' भी इसी धारा के हैं।
3. **उपेक्षित नारी का उद्धार।** 'साकेत' की उर्मिला, जिसका त्याग रामायण में लगभग अनकहा रह गया था, गुप्त जी के यहाँ केन्द्र में आती है। 'यशोधरा' में सिद्धार्थ की पत्नी की पीड़ा और स्वाभिमान को वाणी मिलती है। नारी के प्रति करुणा और सम्मान उनका स्थायी स्वर है।
4. **गांधीवादी मानवीयता।** अहिंसा, सेवा, त्याग और ग्राम्य जीवन के प्रति सम्मान उनके काव्य में गांधी युग के मूल्यों को प्रकट करते हैं।
5. **भाषा और शैली।** सरल, प्रवाहपूर्ण और शुद्ध खड़ी बोली; प्रबंध-काव्य की सफल रचना; संवाद और गीत का मेल।

निष्कर्ष: राष्ट्रीयता, भारतीय संस्कृति, नारी-गरिमा और मानवीयता गुप्त जी के काव्य के प्रतिनिधि स्वर हैं। उन्होंने परंपरा को नए युग की आवश्यकता के अनुसार ढालकर खड़ी बोली कविता को जन-जन तक पहुँचाया।

ignouproject.com

निःशुल्क नमूना: ignouproject.com (श्री चक्रधर पब्लिकेशन प्रा. लि.) | पूरा सेट: ₹49 PDF, ₹100 छपी प्रति | WhatsApp +91 93546 37830

Set ID IPT-GP26-MHD002 | केवल निजी अध्ययन के लिए। इसे बेचना या किसी दूसरी वेबसाइट पर अपलोड करना अनुमत नहीं है।

2. "अँधेरे में कविता में मुक्तिबोध ने भयाक्रांत शोषित वर्ग का चित्रण किया है।" विवेचना कीजिए।

जून 2026, प्रश्न 7। उसी प्रश्नपत्र की व्याख्या (घ) भी इसी कविता से थी।

भूमिका: 'अँधेरे में' गजानन माधव मुक्तिबोध की सबसे प्रसिद्ध लंबी कविता है। यह उनके संग्रह 'चाँद का मुँह टेढ़ा है' (1964) में संकलित है। यह स्वप्न और फैंटेसी के शिल्प में आधुनिक भारत के सत्ता-तंत्र, हिंसा और आम जनता के भय को उजागर करती है।

1. भय और आतंक का वातावरण। कविता में रात का नगर, गश्त, मार्शल लॉ जैसी स्थिति, गिरफ्तारियाँ और दमन के दृश्य आते हैं। आम जनता हर क्षण डरी हुई है। यह वह वर्ग है जो न बोल पाता है, न विरोध कर पाता है।

2. सत्ता का गठजोड़। कवि स्वप्न में रात का एक जुलूस देखता है, जिसमें शहर के प्रतिष्ठित लोग सत्ता के साथ मिलकर चलते हैं। दिन में वही शक्तियाँ दफ्तरों और घरों में षड्यंत्र करती हैं। शोषण केवल आर्थिक नहीं, संगठित सत्ता का तंत्र है। जून 2026 की व्याख्या (घ) इसी प्रसंग से थी।

3. बुद्धिजीवी का आत्मसंघर्ष। कविता का 'मैं' एक मध्यवर्गीय बुद्धिजीवी है, जो सब जानते हुए भी चुप रहने के अपराध-बोध से जूझता है। वह अपनी 'परम अभिव्यक्ति' को खोजता है। अंत में वह चुप्पी तोड़कर अभिव्यक्ति के खतरे उठाने का संकल्प लेता है।

4. फैंटेसी का शिल्प। टूटते स्वप्न, बदलते दृश्य, प्रतीकात्मक चरित्र, और यथार्थ व अतियथार्थ का मेल कविता को नाटकीय बनाते हैं। यह शिल्प भय और बेचैनी को पाठक तक सीधे पहुँचाता है।

निष्कर्ष: 'अँधेरे में' शोषित जनता के भय, सत्ता के षड्यंत्र और बुद्धिजीवी की ज़िम्मेदारी की कविता है। यह केवल अँधेरे का चित्र नहीं, उससे बाहर निकलने की नैतिक पुकार भी है।

ignouproject.com

निःशुल्क नमूना: ignouproject.com (श्री चक्रधर पब्लिकेशन प्रा. लि.) | पूरा सेट: ₹49 PDF, ₹100 छपी प्रति | WhatsApp +91 93546 37830

Set ID IPT-GP26-MHD002 | केवल निजी अध्ययन के लिए। इसे बेचना या किसी दूसरी वेबसाइट पर अपलोड करना अनुमत नहीं है।

3. सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' के काव्य में प्रयोगशीलता का विवेचन कीजिए।

जून 2026, प्रश्न 10। उसी प्रश्नपत्र की व्याख्या (ख) भी निराला से थी, और सत्रीय कार्य में निराला के "राग और विराग" पर प्रश्न आया है।

भूमिका: निराला छायावाद के चार स्तंभों में से एक हैं, पर उनकी सबसे बड़ी पहचान निरंतर प्रयोग है। उन्होंने छंद, भाषा, विषय और शिल्प, चारों में नई राहें खोलीं।

1. मुक्त छंद का प्रवर्तन। 'जूही की कली' (1916 में रचित) को हिंदी में मुक्त छंद की आरंभिक कविता माना जाता है। 'परिमल' की भूमिका में निराला ने मुक्त छंद का पक्ष रखा। उनके लिए कविता की मुक्ति मनुष्य की मुक्ति का रूप थी।

2. भाषा के अनेक स्तर।

- 'राम की शक्तिपूजा' की भाषा संस्कृतनिष्ठ और समासबहुल है। उसकी ध्वनि युद्ध के वातावरण को रचती है।
- 'कुकुरमुत्ता' में बोलचाल, उर्दू और अंग्रेज़ी शब्दों के साथ तीखा व्यंग्य है।
- 'वह तोड़ती पत्थर' और 'भिक्षुक' सरल, सीधी और यथार्थवादी भाषा में लिखी गई हैं।

3. मिथक का नया अर्थ। 'राम की शक्तिपूजा' में राम संशय, निराशा और आत्मसंघर्ष से गुज़रते हैं और शक्ति की मौलिक कल्पना से विजय पाते हैं। पौराणिक कथा में आधुनिक मनुष्य का द्वंद्व आ जाता है।

4. विषय में प्रयोग। छायावादी सौंदर्य और रहस्य से लेकर मज़दूर, भिखारी और साधारण जन के यथार्थ तक; 'सरोज स्मृति' जैसा व्यक्तिगत शोकगीत; और सत्ता पर व्यंग्य, जैसे जून 2026 की व्याख्या (ख) वाली कविता 'राजे ने अपनी रखवाली की'।

5. गीत और लंबी कविता, दोनों। एक ओर संगीतात्मक गीत, दूसरी ओर नाटकीय लंबी कविताएँ। निराला ने दोनों रूपों को समृद्ध किया।

निष्कर्ष: निराला की प्रयोगशीलता केवल रूप की नहीं, दृष्टि की भी है। उन्होंने हिंदी कविता को छंद के बंधन से, भाषा की एकरसता से और विषय की सीमा से मुक्त किया। यही उन्हें आधुनिक हिंदी कविता का सबसे क्रांतिकारी कवि बनाता है।

ignouproject.com

निःशुल्क नमूना: ignouproject.com (श्री चक्रधर पब्लिकेशन प्रा. लि.) | पूरा सेट: ₹49 PDF, ₹100 छपी प्रति | WhatsApp +91 93546 37830

Set ID IPT-GP26-MHD002 | केवल निजी अध्ययन के लिए। इसे बेचना या किसी दूसरी वेबसाइट पर अपलोड करना अनुमत नहीं है।

बाकी कवियों की उत्तर-योजना (16 अंक के प्रश्नों के लिए)

महादेवी वर्मा (जून 2026, प्रश्न 2) - वेदना और करुणा का स्वर, और अज्ञात प्रियतम के प्रति रहस्यवादी भाव। - गीतात्मकता, और दीपक व बदली जैसी प्रतीक-योजना। - 'यामा' पर ज्ञानपीठ पुरस्कार (1982)।

अज्ञेय, 'असाध्य वीणा' (प्रश्न 4) - वज्रकीर्ति की वीणा और राजा का आमंत्रण। - प्रियंवद केशकंबली की साधना: अहं का विसर्जन और समर्पण। - वीणा का हर श्रोता को अलग सुनाई देना, यानी अनुभव की निजता। - मौन, सत्य और कला-दृष्टि; यह कविता 'आँगन के पार द्वार' संग्रह में है।

शमशेर बहादुर सिंह (प्रश्न 5) - चित्रात्मक और बिंबधर्मी शिल्प, शब्दों की मितव्ययिता। - हिंदी और उर्दू का सहज मेल, चित्रकला का प्रभाव; उदाहरण के लिए 'उषा'।

दिनकर (प्रश्न 6) - ओज और राष्ट्रीय चेतना। - 'हुंकार', 'कुरुक्षेत्र' में युद्ध और शांति का प्रश्न, 'रश्मिरेथी', 'परशुराम की प्रतीक्षा'। - 'उर्वशी' पर ज्ञानपीठ पुरस्कार।

रघुवीर सहाय (प्रश्न 8) - अखबारी और बोलचाल की भाषा, विडंबना। - लोकतंत्र और आम आदमी की त्रासदी; उदाहरण के लिए 'रामदास' और 'अधिनायक'।

नागार्जुन (प्रश्न 9) - जनकवि की सपाट बयानी, जिसमें गहरा व्यंग्य और नाटकीयता है। - 'अकाल और उसके बाद', 'बादल को घिरते देखा है'; मैथिली में वे 'यात्री' नाम से लिखते थे।

प्रसाद और पंत (व्याख्या के लिए) - 'कामायनी' में श्रद्धा, मनु और इड़ा के माध्यम से आनंदवाद। - पंत का प्रकृति-चित्रण और 'ग्राम्या' के दौर का यथार्थवादी मोड़, जिसमें 'भारतमाता' आती है।

ignouproject.com

निःशुल्क नमूना: ignouproject.com (श्री चक्रधर पब्लिकेशन प्रा. लि.) | पूरा सेट: ₹49 PDF, ₹100 छपी प्रति | WhatsApp +91 93546 37830

Set ID IPT-GP26-MHD002 | केवल निजी अध्ययन के लिए। इसे बेचना या किसी दूसरी वेबसाइट पर अपलोड करना अनुमत नहीं है।

अभ्यास प्रश्न (अपने शब्दों में)

ये प्रश्न हमने ऊपर के विषयों के अनुसार बनाए हैं; ये इग्नू के प्रश्न नहीं हैं।

1. छायावाद की प्रमुख विशेषताएँ प्रसाद, निराला, पंत और महादेवी के आधार पर स्पष्ट कीजिए।
2. मुक्तिबोध की फैंटेसी-शैली पर एक टिप्पणी लिखिए।
3. भारतेन्दु की कविता में राजभक्ति और देशभक्ति के द्वंद्व पर प्रकाश डालिए।
4. नयी कविता की भाषा पर अज्ञेय और रघुवीर सहाय के आधार पर विचार कीजिए।
5. दिनकर को 'ओज का कवि' क्यों कहा जाता है?

अंतिम तीन सप्ताह की योजना

- **तीसरा सप्ताह:** ऊपर के तीन उत्तर याद से लिखें, हर उत्तर लगभग 450 शब्दों में, 35 मिनट में।
- **दूसरा सप्ताह:** हर दिन पाठ्यक्रम की किसी कविता से दो व्याख्याएँ लिखें, चार भागों वाली विधि से।
- **अंतिम सप्ताह:** बाकी छह कवियों की योजनाओं को पूरे उत्तरों में बदलें।
- **अंतिम दो दिन:** ignou.ac.in पर पिछले सत्रों के एम.एच.डी.-02 प्रश्नपत्र देखें और एक पूरा प्रश्नपत्र 3 घण्टे में हल करें।

यह निःशुल्क सेट क्या है और क्या नहीं

इस सेट में जून 2026 के प्रश्नपत्र के आधार पर तीन पूरे हल उत्तर और बाकी कवियों की योजना है। पूरा एम.एच.डी.-002 सेट, सभी कवियों और व्याख्या-अभ्यास के साथ, हिन्दी माध्यम में PDF के रूप में ₹49 या छपी प्रति के रूप में ₹100 में उपलब्ध है; छपी प्रति के ऑर्डर पर एक बार ₹100 कूरियर शुल्क लगता है। ऑर्डर के लिए WhatsApp करें: +91 93546 37830।

इग्नू गेस पेपर प्रकाशित नहीं करता, और कोई भी गेस पेपर यह नहीं बता सकता कि परीक्षा में कौन-से प्रश्न आएँगे। इग्नू की अध्ययन सामग्री और इग्नू के अपने पुराने प्रश्नपत्र (ignou.ac.in, Student Services, Downloads, Previous Year Question Papers) को पहला स्रोत बनाएँ।

ignouproject.com द्वारा तैयार, श्री चक्रधर पब्लिकेशन प्रा. लि., नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित। स्वतंत्र प्रकाशन; इग्नू से संबद्ध या अनुमोदित नहीं। 29 सितंबर 2026 को तैयार।

© 2026 श्री चक्रधर पब्लिकेशन प्रा. लि. इस निःशुल्क सेट को सहपाठियों के साथ इसी रूप में साझा करें; इसे बेचना या किसी दूसरी वेबसाइट पर अपलोड करना अनुमत नहीं है। Set ID IPT-GP26-MHD002